पद्यसंग्रह

जोकि

अवध देशीय देहाती पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये
श्रीयुत मुन्शी हनुमान प्रसाद साहिब डिप्यूटी इन्स्पेक्टर
मदारिस ज़िलअ़ लखनऊ के इहतिमाम से रचा गया
श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

श्री महिमा सम्पन्न श्री साहिब डैरेक्टर बहादुर
आफ़ पब्लिक् इन्स्ट्रक्शन् पश्चिमोत्तर व अवधदेशीय की

अनुमति से

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण यन्त्रालय में छपा॥

मार्च

सन १८७८ ई०

श्री गणेशाय नमः

तुलसी दास जी की कविता

चौपाई

सावधान कर मन पुनि शंकर। लागे कहन कथा अति सुंदर

बार बार प्रभु चहत उठावा। प्रेम मगन तेहि उठत न भावा

प्रभु पद पंकज कपि कर शीशा। सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा

कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा

कहु कपि रावण पालित लंका। केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबंका

प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना।। बोले वचन विगत अभिमाना

शाखा मृग के बड़ि मनसाई। शाखा ते शाखा पर जाई ॥

नांघि सिंधु हाटक पुर जारा। निशिचर गण वधि विपिन उजारा

सो सब तव प्रताप रघुराई॥। नाथ न कछुक मोरि मनसाई

दोहा ताकह प्रभु कछु अगम नहिं जापर तुम अनुकूल

तव प्रताप बडवानलहि जारि सकै खल तूल ॥

सुनत वचन प्रभु बहु सुखमाना। मन क्रम वचन दास निज जाना

मांगु वचन सुत वर अनुकूला। देउं आजु तुम कहं सुखमूला

नाथ भक्ति तव सुखदायिनी। देहु कृपा करि शिव मन भावनी

सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी।

उमा राम सुभाव जिन्ह जाना। ताहि भजन तजि भाव न आना।
यह संवाद जासु उर आवा। रघुपति चरण भक्ति तेइ पावा।
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृंदा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा।
तब रघुपति कपि पतिहि बोलावा। कहा चलन कर करहु बनावा।
अब विलम्ब केहि कारण कीजे। तुरत कपिन कहं आयसु दीजे।
कौतुक देखि सुमन बहु वर्षे। नभ ते भवन चले सुर हर्षे॥
दोहा कपि पति बेग बोलायउ, आये यूथप यूथ
नाना वरण अतुल बल वानर भालु बरूथ
प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा। गरजहिं भालु महा बल कीशा।
देखा राम सकल कपि सेना। चितव कृपा करि राजिवनयना।
राम कृपा बल पाय कपिंदा। भये पच्छ युत मनहुं गिरिंदा।
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना। शकुन भये सुंदर सुख नाना।
जासु सकल मंगल मयनीती। तासु पयान शकुन यह नीती।
प्रभु पयान जाना बैदेही॥। फर के वाम अंग शुभ तेही
जो जो शकुन जानकिहि होई। अशकुन भयउ रावणहि सोई
चला कटक को बरनै पारा। गरजहिं वानर भालु अपारा
नख आयुध गिरि पाद पधारी। चले गगन महं इच्छा चारी
केहरि नाद भालु कपि करहीं। डगमगाहि दिग्गज चिक्करहीं
छंद· चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खर भरे.
मन हरख दिन कर सोम सुरमुनि नाग किन्नर दुख टरे
घर करहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं

जय राम प्रबल प्रताप कोशल नाथ गुणगण गावहीं
सक सहिन भार अपार अहि पति वार वार विमोहहीं
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पीठि कठोर सो किमि सोहहीं
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्पर सर्प राज सो लिखत अविचल पावनी

दोहा यहि विधि जाय कृपा निधि उतरे सागर तीर ॥
जहं तहं लागे खान फल भालु विपुल कपि वीर

उहां निशाचर रहैं सशंका ।। जब ते जारि गयो कपि लंका।
निज निज गृह सब करैं विचारा। नहिं निशिचर कुल केर उबारा
जासु दूत बल वरणि न जाई। तेहि आये पुर कवन भलाई
अति सभीत सुनि पुरजन बानी मन्दोदरी हृदय अकुलानी।
रही जोरि कर पति पद लागी। बोली वचन नीति रस पागी।
कन्त कर्ष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति चित हित धरहू
समुझत जासु दूत की करणी। स्रवहिं गर्भ रज नीचर घरणी
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंथ जो चहहु भलाई
तव कुल कमल विपिन दुखदाई। सीता शीत निशा सम आई
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें। हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हें

दोहा राम बाण अहि गण सरिस निकर निशाचर भेक
जब लगि ग्रासन तबहिं लगि यतन करहु तजि टेक

श्रवण सुनत शठ ता करि बानी। विहंसा जगत विदित अभिमानी
समय सुभाव नारि कर सांचा। मंगल माहिं अमंगल राचा

जो आवै मर्कट कटकाई॥ । जियहिं बिचारि निशिचर खाई।
कंपहिं लोकप जाके त्रासा॥ । तासु नारि सभीत बड़ि हासा॥
अस कहि बिहँसि ताहि उर लाई। चलेउ सभा ममता अधिकाई।
मन्दोदरी हृदय कर चिंता॥ । भयो कंथ पर बिधि बिपरीता॥
बैठेउ सभा खबरि अस पाई। सिंधु पार सेना सब आई॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मौन करि रहहू॥
जितेउ सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं
दोहा सचिव बैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आश
राज धर्म तन तीन कर होइ बेग हीं नाश ॥
सोइ रावण कहँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाय सुनाई
अव सर जानि बिभीषण आवा। भ्राता चरण शीश तेहि नावा
पुनि शिर नाय बैठि निज आसन। बोला वचन पाइ अनुशासन
जो कृपाल पूछेहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहब मैं ताता
जो आपन चाहो कल्याना। सुयश सुमति शुभगति सुख नाना
तौ पर नारि लिलार गोसांई। तजो चौथ चंदा की नाई॥
चौदह भवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्टै नहिं कोई॥
गुण सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दोहा काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पंथ॥
सब परि हरि रघुवीर पद भजहु कहहिं सद ग्रंथ
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु के काला
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता

गो द्विज धेनु देव हित कारी। कृपा सिंधु मानुष तनु धारी
जन रंजन भंजन खल ब्राता। वेद धर्म रक्षक सुर त्राता॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा। प्रणता रति भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही। भजहु राम बिनु काम सनेही
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा। विश्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रय ताप नशावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझ जिय रावन
दोहा वार वार पद लागौं विनय करौं दश शीश॥
परि हरि मान मोह मद भजहु कोशला धीश
मुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन कहि पठई यह बात
तुरत सो मैं तुम सन कही पाय सु अवसर तात
माल्य वंत अति सचिव सयाना। तासु वचन सुनि अति सुख माना
तात अनुज तव नीति विभूषण। सो उर धरहु जो कहत विभीषण
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोउ॥ दूरि न करहु इहां ते कोऊ॥
माल वंत गृह गयउ बहोरी। कहेउ विभीषण पुनि कर जोरी
सुमति कुमति सब के उर रहई। नाथ पुराण निगम अस कहई
जहां सुमति तहं संपति नाना। जहां कुमति तहं विपति निदाना
तव उर कुमति बसी विपरीती। हित अन हित जानत रिपु प्रीती
काल रात्रि निशि चर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥
दोहा तात चरण गहि मांगउ राखहु मोर दुलार
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार
बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी। कही विभीषण नीति बखानी

सुनत दशानन उठा रिसाई। खल तोहि मृत्यु निकट चलि आई॥
जिअसि सदा शठ मोर जिआवा। रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा॥
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जेहि जीते हम नाहीं॥
मम पुर बसि तपसिन सन प्रीती। शठ मिलु जाहि ताहि कहु नीती॥
अस कहि कीन्हेसि चरण प्रहारा। अनुज गहे पद बारहि बारा॥
उमा संत कै यहै बड़ाई॥। मंद करत जो करै भलाई॥
तुम पितु सरिस भलेहि मोहि मारा। राम भजे हित होइ तुम्हारा॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाय कहत अस भयऊ॥

दोहा राम सत्य संकल्प प्रभु सभा काल बश तोरि॥
मैं रघुनायक शरण अब जाउं देहु जनि खोरि

अस कहि चला विभीषण जबही। आयु हीन भे निशिचर तबही॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्याण अखिल कर हानी॥
रावण जबहि विभीषण त्यागा। भयो विभव बिनु तबहि अभागा॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता। अरुण मृदुल सेवक सुखदाता॥
जे पद परसि तरी ऋषि नारी। दंडक कानन पावन कारी॥
जे पद जनक सुता उर लाये। कपट कुरंग संग धरि धाये॥
हर उर सर सरोज पद जोई। अहो भाग्य मैं देखब सोई॥

दोहा जिन पायन कर पादुका भरथ रहे मनुलाय॥
ते पद आजु विलोकिहौं इन नयनन अब जाय

एहि विधि करत सप्रेम विचारा। आयउ सपदि सिंधु के पारा

कपिन विभीषण आवत देखा। जानेउ कोउ रिपु दूत विशेषा

ताहि राखि कपि पति पहं आये। समाचार सब जाइ सुनाये।

कह सुग्रीव सुनिय रघुराई। आवा मिलन दशानन भाई

कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहा कपीश सुनहु नरनाहा

जानि न जाइ निशाचर माया। काम रूप केहि कारण आया

भेद हमार लेन शठ आवा। राखिय बांधि मोहिं अस भावा

सखा नीति तुम नीकि विचारी। मम प्रण शरणागत भय हारी

सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना। शरणागत वत्सल भगवाना

दोहा शरणागत कहं जो तजें निज अनहित अनुमानि

ते नर पामर पाप मय तिनहिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्र बध लागहि जाहू। आये शरण तजों नहिं ताहू॥

सन्मुख होइ जीव मम जबहीं। जन्म कोटि अघ नाशौं तबहीं

पापवंत कर सहज सुभाई॥ भजन मोर तेहि भाव न काउ

जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोरे सन्मुख आव कि सोई

निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छिद्र न भावा

भेद लेन पठवा दश शीशा। तबहु न भय कछु हानि कपीशा

जग महं सखा निशाचर जेते। लक्ष्मण हनहिं निमिष महं तेते

जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राण की नाई

दोहा उभय भांति लै आवहु हंसि कह कृपानिधान

जय कृपाल कहि कपि चले अंगदादि हनुमान

चतुराई के विषय में दृष्टान्त

दोहा भाव सरस समुझत सबै भले लगै यह भाय
जैसे अवसर की कही बानी सुनत सोहाय ॥
नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात ॥
जैसे बरणत युद्ध में रससिंगार न सुहात ॥
फीकी पै नीकी लगै कहिये समय विचारि ॥
सब के मन हर्षित करै ज्यौं विवाह में गारि ॥
जाही ते कछु पाइये करिये ताकी आस ॥
रीते सरवर पै गये कैसे बुझत पियास ॥
स्वाति बूंद है मघन में चातक मरत पियास
जो जाही को ह्वै रहै सो लेहि पूरै आस ॥
भले बुरे सब एक से जब लग बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक ऋतु बसंत के माहिं
मधुर वचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान
तनक सीत जल से मिटै जैसे दूध उफान ॥
सबै सहायक सबल के कोइ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को दीपहि देत बुझाय ॥
कछु बसाय नहिं सबल सों करै निबल सोंजोर
चलै न अचल उखारि तरु डारत पवन झकोर
जो जाही सों रचि रह्यो तिहि ताही सों काम
जैसे किरवा नीम को कहा आम सों काम ॥

प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है कांजी ते फटि जाय ॥ ॥
पर घर कबहूं न जाइये गये घटत है जोति
रवि मण्डल में जात शशि क्षीण कला द्युति होति
अस बनाये बन रहे ते फिरि और ब नैन ॥
कान कहत नहिं बैन जो जीभ सुनत नहिं बैन
मूरख गुण समुझै नहीं तौन गुणी में चूक
कहा भयो दिन के विभव देखे जो न उलूक ॥ ॥
मूढ़ तहां हीं मानिये जहां न पंडित होय ॥ ॥
दीपक को रवि के उदय बात न पूछै कोय ॥
निपट अबुध समुझै कहा बुधजन वचनबिलास
कबहूं भेक न जानही अमल कमल की बास ॥
सांच झूठ निर्णय करै नीति निपुण जो होय ॥
राज हंस बिन को करै क्षीर नीर को दोय ॥
दोष हि कोउ न है गहै गुण न गहै खल लोक
पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयोधर जोंक ॥
कारज धीरे होत है काहे होत अधीर ॥ ॥
समय पाय तर वर फरै केतिक सींचो नीर ॥
क्यों कीजे ऐसे यतन जाते काज न होय ॥
परबत पै खोदे कुवां कैसे निकसै तोय ॥
जो चाहे सोई करै बड़े असं कित संग ॥

सब के देखत नगन हर धरत गौरि अरधंग
बड़े सहज ही बात सों रीझि देत बकसीस॥
तुलसी दल ते विष्णु जो आक धतूरे ईश॥
सुधरी बिगरे बेग ही बिगरी फिरि सुधरै न॥
दूध फटे कांजी परे सो फिरि दूध बनै न॥ ॥
छोटे नरते रहत है शोभा युत शिर ताज॥
निरमल राखे चांदनी जैसे पायं दाज॥
सहज रसीलो होय जो करे अहित पर हेत
जैसे पीड़ित कीजिये ऊख तऊ रस देत॥
कबहूं कुसंग न कीजिये किये प्रकृति की हानि
गूंगे को समुझाय वो गूंगे की गति आनि।
कहा करै कोउ यतन प्रकृति और की और
विष मारे ज्यावे सुधा उपजे एकहि ठौर॥
डरे न काहू दुख सों जाहि प्रेम की बान॥
भंवर न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान॥
धन बाढ़े मन बढ़ गयो नाहिन मन घट होय
ज्यों जल संग बाढ़े जलज जल घट घटे न सोय
सब ते लघु है मांगिबो यामें फेर न सार॥
बलि पै यांचत ही भये वावन कर करतार
सबै एक से होत नहिं होत सबन में फेर॥
कुबरी खारी चाप तो लोह नवा राम भेर।

जैसे की सेवा करै तैसी आशा पूर ॥ ॥
रत्ना कर सेवै रतन सर सेवै सालूर ॥ ॥
होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसङ्ग के थान
गंधी और लोहार की बैठकु देखु दुकान ॥
ठौर छुटे ते मीत हू है अमीत सत रात ॥
रवि जल उघरे कमल को जारत गारत जात
जात गुनी जातन तहां आडम्बर युत सोय
पहुंचे चङ्ग अकाश लौं जो गुन संयुत होय
गुन वारो सम्पति लहै लहै न गुन बिन कोय
काढ़ै नीर पताल ते जो गुन युत घट होय
अरि छोटो गुनिये नहीं जाते होत बिगार
तृण समूह को छिनक में जारत तनक अंगार
पंडित जन को श्रम मरम जानत जे मतिधीर
कबहूं बांझ न जानहीं तन प्रसूत की पीर
वीर पराक्रम ना करैं तासों डरत न कोय
बालकहू को चित्र के बाघ खिलोना होय
नृप प्रताप ते देश में रहै दुष्ट नहिं कोय ॥
प्रगटे तेज दिनेश को तहां तिमिर नहिं होय
कारज ताही को सरै करै जो समय निहार
कबहूं न हारै खेल जो खेलै दांव विचार
कोउ दूर न करि सकै उलटे विधि के अंक

उदधि पिता तउ चंद्र को धोय न सक्यो कलंक
गांहक सबै सपूत के सारे काम सपूत ॥
सब को ढंपन होत है जैसे बन को सूत ॥
करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान
को सुख को दुख देत है देत कर्म झकझोर
उरझै सुरझै आप ही ध्वजा पवन के जोर
भली करत लागै बिलँब बिलँब न बुरे विचार
भवन बनावत दिन लगै ढाहत लगै न वार
सोई अपनो आपनो होत निरंतर साथ ॥
होत परायो आपनो पास्त्र पराये हाथ ॥
कहु रस में क्यों रोस में अरि से जनि पतियाय
जैसे शीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय
अंतर अंगुरी चारि को सांच झूंठ में होय ॥
सब मानै देखी कही सुनी न मानै कोय ॥
होय भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय ॥
दीपक सों काजल प्रगट कमल कीच में होय
होय भले चाकरन ते भले धनी को काम
ज्यों अंगद हनुमान ते सीता पाई राम
सुख सज्जन के मिलन को दुर्जन मिले जनाय
जानै ऊख मिठास को जब मुख नींब चबाय

जाहि मिले सुख होत है तेहि बिछुरे दुख होय ॥
सूर्य उदय फूलै कमल ता बिन सकुचै सोय ॥
झूठे हू करिये यतन कारज बिगरे नाहिं ॥
कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फिरिजाहिं
कारज सोइ सुधारि है जो करिये सम भाय॥
अति बरसे बरसे बिना ज्यों करसन कुंभिलाय।
रहै प्रजा धन यत्न सों तहं वांकी तरवारि ॥
सो फल कोउ न ले सके जहां कदीली डारि।
पंडित अरु बनिता लता शोभित आश्रम पाय
है मानिक बहु मोल को हेम जटित छवि छाय
अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय॥
वेश्या बरष घटा वहीं योगी बरष बढ़ाय॥
कहूं कहूं गुन होय ते उपजत दुःख शरीर॥
मधुरी बानी बोलि के परत पींजरे कीर ॥ ॥
भले बुरे निबहैं सबै महत पुरुष के संग॥ ॥
चन्द्र सर्प जल अग्नि ये बसत शंभु के अंग॥
बिना कहेहू सत पुरुष पर को पूरै आश ॥
कौन कहत है सूर्य्य को घर घर करत प्रकाश
कछु कहि नीच न छेड़िये भलो न वाको संग
पाथर डारे कीच में उछलि बिगारै अंग ॥
मीठी खाटी वस्तु नहिं मीठी जाकी चाह॥

अंबिली मिसरी छांड़ि के आंब खात सराह॥
खाय न खरचे सूम धन चोर सकल ले जाय॥
पीछे ज्यों मधु मक्षिका हाथ मले पछिताय॥
उत्तम विद्या लीजिये जो पै नीच पै होय ॥
परी अपावन ठौर में कांचन तजत न कोय।
जानि बूझि अजु गुति करै तासों कहा बसाय
जागत ही सोवत रहै ताको कहा जगाय ॥
सजन बचावे कष्ट ते रहै निरंतर साथ ॥
नैन सहाई ज्यों पलक देह सहाई हाथ ॥
अरि के कर में दीजिये औसर को अधिकार
ज्यों ज्यों द्रव्य उदार है त्यों त्यों यश विस्तार
बुद्धिवान गंभीर को संगत लागत नाहिं ॥
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत विष न होय तेहि माहिं
सज्जन को दुख हू दिये दुरजन पूरे आस॥
जैसे चंदन को घिसे सुंदर देत सुबास ॥
सज्जन चित कबहूं न धरत दुरजन जन के बोल
पाहन मारे आम को तउ फल देत अमोल
विरले नर पंडित गुनी विरले बूझन हार।
दुख खंडन विरले पुरुष जे उत्तम संसार॥
जे करतार बड़े किये मग पग धरत विचार
दुर्जन हूं सों मिलि चलैं बोलें रोस निवार।

जाहि बड़ाई चाहिये तजे न उत्तम साथ॥ ॥
ज्यों पलास संग पान के पहुंचे राजा हाथ॥
वचन पारखी होहि तू पहिले आपन भाष॥
आन पूछे नहिं भाषिये यही सीख जिय राख।
मुख रु श्रवण दृग नासिका सब ही के एक ठौर
कहबो सुनिबो देखबो चतुरन को कछु और
एक कामिनि अरु कवि वचन दोउ रस को ठौर
बेधक को मन बेधई वे कामिनि कवि और॥
जो तू चाहै अधिक रस सीख रुख को लेय॥
जो तोसों अन रस करै ताहि अधिक रस देय॥
नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय।
ज्यों ज्यों नीचे ह्वै चलै त्यों त्यों ऊंचो होय॥
कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर॥
जैसे बस सागर विषे करत मगर सों वैर॥
अपनी पहुंच विचारि कै करतब करिये दौर।
ते ते पांव पसारिये जेती लंबी सौर॥ ॥
पिसुन छल्यो नर सुजन सो करत विस्वास न चूक
जैसे दाझो दूध को पीवत छांछहि फूंक॥
फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजे व्योपार॥
जैसे हांडी काठ की चढ़ै न दूजी वार॥ ॥
करिये सुख को होत दुख यह कह कौन सयान॥

वा सोने को जारिये जासों फाटे कान ॥ ॥
भले बुरे जहं एक से तहां न बसिये जाय ॥
ज्यों अन्याय पुर में बिके खर गुड़ एकै भाय ॥
भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव ॥
जो मानै तो देव है नहीं भीत को लेव ॥ ॥
अति अनीति लहिये न धन जो प्यारे मन होय॥
पाये सोने की छुरी पेट न मारे कोय ॥ ॥ ॥
मूरख को पोथी दई बांचन का गुण गाय ॥
जैसे निरमल आरसी दई आंधरे हाथ ॥ ॥
अति हठ मत कर हठ बढ़े बात न करिये कोय
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय
लालच हू ऐसो भलो जासों पूजे आस ॥ ॥
चाटत हूं कहुं ओस के बुझत काहु की प्यास
जैसो गुण दीन्हों दई तैसो रूप निबंध ॥ ॥
ये दोऊ कहं पाइये सोनो और सुगंध ॥ ॥
प्रेम निबाहन कठिन है समुझ कीजियो कोय
भंग भखन है सुगम पै लहर कठिन ही होय
एक वस्तु गुण होत है भिन्न प्रकृति के भाय॥
भटा एक कोपित करै करत एक को बाय ॥
बिन स्वारथ कैसे सहे कोऊ करुवे बैन ॥
लात खाय चुप कारिये जो होय दुधारू धेन।

करै बुराई सुख लहै कैसे पावै कोय ॥ ॥
रोपै पेड़ बबूल को आंब कहां ते होय ॥
होय बुराई ते बुरो यह कैसोनिरधार ॥
खात खनैगो और को ताको कूप तयार॥
एक भेष के आसरे जौति वरए छिपिजात
ज्यों हाथी के पांव में सब को पांव समात॥
कन कन जोरे मन जुरे खाते निरवे सोय॥
बूंद बूंद सों घट भरे टपकत बीते तोय ॥
श्रम हीं सों सब मिलत है बिन श्रम मिलै न काहि
सीधी अंगुरी घी जम्यो कबहूं निकरत नाहिं
होत न कारज मो बिना यहै कहै सोअयान
जहां न कुक्कुट शब्द तहं होत न कहूं बिहान
यही बात सब ही कहै राजा करै सो न्याव॥
ज्यों चौपरि के खेल में पांसो परै सो दांव॥
पर को औगुण देखिये अपनी दृष्टि न होय
करै उजेरो दीप पै तरे अंधेरो जोय ॥ ॥
अपनी अपनी ठौर पर सब को लागै दाव।
जल में गाडी नाव पर थल गाड़ी पर नाव।
सुख देखाय दुख दीजिये खल सों लरिये काहि
जो गुरु दीन्हे ही मरत क्यों विष दीजे ताहि।
अन पूछे ही जानिये मूढ़ देखि मन माहिं॥

छल के ओछे नीर घट पूरे छल के नाहिं ॥
विन शतवार न लावा ही ओछे जन की प्रीति
अम्बर डम्बर सांझ के ज्यों बारू की भीति
गुल सपूत जान्यो परै रवल सब लक्षण गात
होन हार विरवान के होत चीकने पात ॥
जो धनवंत सुदेय कछु देय कहा धन हीन
कहा निचोरै नग्न जल न्हाय सरोवर दीन ॥
होत निवाहन आपनो लीन्हे फिरे समाज
चूहा बिल न समात है पूंछ बांधिये छाज
बिना प्रयोजन भूलि हू हटिये नाहीं हाट ॥
जानो नहिं जा नगर को ताकी पूछन बाट
इंगित औ आकार ते जान लेत जो भेद
तासों बात दुरै नहीं ज्यों दाई सों पेट ॥
आप कहे नाहिन करे दाता को है हेत ॥
आप न जावे आसरे और न को सिख देत
जो करिये सो कीजिये पहिले कर निरधार
पानी पी घर पूछनो नाहक भलो विचार
पाछे कारज कीजिये पहिले यतन विचार
बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहिले पार।
ठीक किये बिन और की बात सांच तमयर्प
हाथ अंधेरी रैन में परी जेवरी सर्प ॥

झूंठ बिना फीकी लगै अधिक झूठ दुख भौन
झूंठ तिलोंही बोलिये ज्यों आटे में लोन ॥

और देखि के छूजिये कुटिल सरल गति आप
बाहर टेढ़ो फिरत है बांबी सूधो सांप ॥ ॥

दोउ चाहैं मिलन को तो मिलाप निरधारि
कबहूं नाहिन बाजि है एक हाथ ते तारि ॥

आपै कारज आपनो करत कुसंगति चाप ॥
पाय कुल्हारी देत है मूरख अपने हाथ ॥

ताही को करिये जतन रहिये जाकी ओर ॥
कौन बैर के डार पर काटै सोई डार ॥ ॥

पर तरुनी के देखिये कह बरने कोउ ताहि
कर कंकन की आरसी को देखत है चाहि

आवै आदर ना करै जात रहे पछिताय ॥
आयो नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय ॥

निबल सबल के पक्ष ते सबलन सों अनखात
देत हिमायत की गधी एराकी के लात ॥

बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय
कांसे ऊपर बीजली परत कहै सब कोय।

ओछे नर के पेट में रहै न मोटी बात ॥
आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात ॥ ॥

तर से हू पर से नहीं नोढ़ा रहत उदास ॥ ॥

जो सब सूरता भाद में विसी उन्हाले आस॥
हिलत मिलत चितवन मिटी वय बीते कर तूल
योगी था सो उठ गया आसन रही भभूत॥
मिलन चले आये बहुरि तऊन रही तिय चित्त॥
कांधे डारी कामरी योगी काके मित्त॥ ॥
तजि कै सुंदर चतुर पिय विरहै अनत बसाय
कूकर चौके चडाइये चाकी चाट न जाय॥
निरखि मात सौती सबै रहीं प्रीति हित हार
लेय परोसिन झोपरी नित उठि करती रार
वय रति गति मति चाह बिन पिय रिझवन कीबार
धोबी बेटा चांदसा सीपी और पटार॥ ॥
रूठ्योपियसोंतिन नित्योसखिवहि खिजत कर भान
नाव सचलति कुम्हार को खर के मेटति कान
पिय चितवन पठई सखी रही बैठ सुख लेय॥
चारो कुतिया मिल गई पहरो काको देय॥ ॥
सब सुखवन्द पिय हित करै तऊन रहतिय नीति
भुस ऊपर को लीपनो अरु बालू की भीति॥
पिय औरै चितवन चलन घर तिय सो नहिं लेस।
जैसे कंथा घर रहे तैसे गये विदेश॥ ॥
वय बीते आये रमन अब न लहत चित चाय॥
बीत्यो ब्याह कुम्हार को भांडा लैलै जाय॥

सोरठा पतरी लै घर आव आगि वारि दे गोदले ॥
करन पात पहि राव कुस्म कहो बारी नहीं ॥
आपने आपने कर यथे लिखि पूजत तिय भीति
सुफल होय मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीति ॥
तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजे बास।
स्वेत स्वेत सब एक से करर कपूर कपास ॥
राम नाम आराधबो तुलसी वृथा न जाय॥
लरकाई को पैरबो आगे होत सहाय ॥
जिमि पनि हारी जेवरी खैंचत करे परवान॥
तुलसी रसना राम कहु पाय केतिक अनुमान॥
तुलसी रसना तो भली जो तू सुमिरे राम॥
नाहित काढि निकासिये मुखमें भलो न चाम
तुलसी बिलंब न कीजिये भजि लीजे रघुबीर
तन तरकस ते जात है स्वास सारि खे तीर
एके साधे सब सधे सब साधे सब जाय॥
जो गहि सेवै मूल को फूले फले अघाय ॥
स्वारथ सीता राम हैं परमारथ सिय राम॥
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा है काम ॥ ॥
स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एक ही ओर
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
तुलसी सोई चतुरता राम चरण लव लीन

पर धन पर मन हरन को वेश्या बड़ी प्रवीन
चतुराई चूल्हे परै ज्ञानी मन के घाव ॥
तुलसी हर सों प्रेम नहिं सो जर मूल न साव ॥
तुलसी जो पै राम सों नाहीं सहज सनेह ॥
मूड़ मुड़ायो सो वृथा भांड़ भये तजि गेह ॥
मूड़ उघारन किन कह्यो वस्त्र रहे प्रिय लोग
घरही सती कहावती जरती नाहिं वियोग ॥
यथा लाभ संतोष सुख प्रभु पर चरण सनेह
तुलसी जो मन हाथ है जस कानन तस गेह
तुलसी खोटे दास को रघुपति राखत मान ॥
ज्यों मूरख उपरोहि नहि देत दान यजमान
गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भरि पूर ॥
तुलसी चातक के मते बिन स्वाती सब धूर ॥
गुण स्वरूप बल द्रव्य को प्रीति करै सब कोय
तुलसी प्रीति सराहिये जो इन ते बाहर होय
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास
तुलसी प्रीति सराहिये मुये मीत की आस
प्रभुता को सब कोउ चहै प्रभु को चहै न कोय
जो तुलसी प्रभु को चहै तुरतै प्रभुता होय ॥
तुलसी घर के घेर में घरी घरी तन छीन ॥
कबहूं नाव न बन फिरै कर कर याको पीन ॥

6350

काम क्रोध मद लोभ की जब लग मन में खान
तब लग पंडित मूर्ख हू तुलसी एक समान
स्वामी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक ॥
तुलसी यामें सो बड़ो जाके मन में टेक ॥ ॥
तुलसी मन को मुकुर है लखै सुलक्षन कोय
जैसो जाको भाव है तैसे ताको होय ॥ ॥
होत भले के अन भलो होत दानि के सूम।
होत कपूत सपूत के ज्यों पावक मह धूम॥
नीच निचाई ना तजे साधन हू के संग ॥
तुलसी चंदन विटप बस बिन विष भो न भुजंग
आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति ज्ञान दृढ़ होय
तुलसी बिना उपासना बिन दूलह की जोय
आवत ही हर्षै नहीं नयनन नहीं सनेह ॥
तुलसी तहां न जाइये कंचन वर्षै मेह ॥
हरषि उठे आदर करै आवत जान प्रतीत
तुलसी तब हीं जानिये परमेश्वर सों प्रीत
तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग
हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग
तुलसी कहत पुकारि के सुनो सकल दे कान
हेम दान गज दान ते बड़ो दान सन मान॥
पर सुख संपति देखि सुनि जरहिं ते जड़ बिन आग

तुलसी तिन के भाग ते चले भलाई भाग

तुलसी कबहुं न त्यागिये अपने कुल की रीति
लायक हूं सो कीजिये व्याह बैर श्रौ प्रीति

तुलसी निज कीरति चहै पर कीरति को खोय
तिन के मुख मसि लागिये मिटै न मरिहै धोय

तुलसी या संसार में पंच रत्न हैं सार ॥
साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार

बैर सनेह सयान को तुलसी जो नहिं जान॥
सो किमि प्रेम मग पग धरै पशु बिन पूंछ बखान

यह संसार मन मोहना मन मोहै दिन रात॥
बिना भक्ति जे रहत हैं जन्म अकारथ जात

धन योबन को गर्बयो कबहू करिये नाहिं
देखत ही मिटि जात है ज्यों बादर की छाहिं

जान बूझ अज गुति करै तासों कहा बसाय
जागत ही सोवत रहै तेहि को सकै जगाय

या संसार में आय के छांडि देय तू ऐंठ
लेना है सो लेइले उठी जात है पैंठ ॥

सांच बरो बर तप नहीं झूठ बरो बर पाप
जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप॥

सांचे श्राप न लगाई सांचे काल न खाय॥
सांचे को सांचा मिले सांचे माहिं समाय॥

सत्य वचन मुख जो कहत ताकी चाह सराह
गाहक आवत दूरि ते एक शब्द की चाह।
जग में प्रतीति बढ़ाइये रहिये सांचे होय ॥
झूठे नर की सांचिये साखि न मानै कोय ॥
कहते हैं करते नहीं सो तो बड़े लबार ॥
आखिर धक्के खायेंगे ईश्वर के दरबार ॥
कल्ह करै सो आज ही आज करै सो अब्ब
पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब्ब
सुख में सज्जन बहुत हैं दुख में लीन्हे कौन
सोना सज्जन कसन को बिपति कसौटी कीन
दुख में सुमिरन सब करैं सुख में करै न कोय॥
सुख में जो सुमिरन करै तो दुख काहे को होय
मेरा मुझ को कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझ को सौंपता क्या लागै है मोर ॥
पांव पै लगी सुध नहीं करै काल को साज॥
काल अचानक मारि है ज्यों तीतर को बाज
माली आवत देखि के कलियां कली पुकार॥
फूली फूली चुनि लई कालि हमारी बार॥
काचा काया मन अथिर थिर थिर काम करंत
ज्यों ज्यों नर निधरक फिरै त्यों त्यों काल हसंत
आस पास योधा खड़े सबै बजावें गाल ॥

बीच महल ते ले चले ऐसा बरबस काल ॥
माटी कहै कुम्हार सों क्या रूंधै तू मोहिं ॥
एक दिन ऐसा होयगा मैं रूंधौंगी तोहिं ॥

प्रश्नोत्तर

देबो यश को मूल है याते देबो ठीक ॥ ॥
पर देबे मैं जानि लो दुख कबहूं नहिं नीक
संचय करिबो है भलो सो आवै बहु काम ॥
पाप न संचय कीजिये जो अपयश को धाम
जड़ कबहूं नहिं काटिये काहू की मन धारि
पाप रु ऋण की जर कटी भलो एक निरधारि
भलो होत नहिं मारिबो काहू को जग माहिं ॥
भलो मारिबो क्रोध को तासम नर रिपु नाहिं
जोरी करि नहिं रोकिये काहू को मन मीत
बनै तो मन को रोकिये याते होय बिनीत ॥
संग सदा सुख दान है करिये सज्जन देख
कबहुं न करिये दुष्ट को संग यही अवरेख
करै हिरस जो काहु की तासो लहै नर हान।
पर विद्या की हिरस कर जासों हो जग मान ॥
प्रीति रीति दुख मूल है मैं कीन्हों निरधार ॥
प्रीति भली भगवान की याते हो भव पार
भलो न जग में त्रास कोउ त्रास दुःख को मूल ॥

पर गुरु पितु के त्रास ते मिटै दुःख को मूल ॥ ॥
बुरो मांगिबो जगत में याते हो अपमान ॥
क्षमा मांगिबो ईश ते भलो एक करि ज्ञान॥
प्रातहि उठि के नित्य तू करिये प्रभु को ध्यान
जाते जग में होय सुख अरु उपजे सत ज्ञान
काहू ते कडुओ वचन कहो न कबहूं जान
तुरत मनुज के हृदय में छेदत है जिमि बान॥
पढ़िबे में कबहूं नहीं नागा करिये चूक॥ ॥
कुपढ़ लोग मांगत फिरैं सहहिं निरादर भूक
कबहुं न चोरी कीजिये यद्यपि मिलै बहु वित्त
नर फंसि ताके फंद में पावत दुःख अमित्त॥
मीठी बोली बोलिये करिये सब सों प्रीति॥
करै प्रेम तासों सकल लखि शुक सारिक रीति
यद्यपि होतु पितु मातु को सब सुतपै सम नेह
लखि सपूत ठंढक लहै जरत कपूत लखि देह
जो जन ईर्षा धारि मन जरत देखि पर हित्त
कैसे ऐसे पुरुष के शीतलता रह चित्त ॥
जानि सर्व गति ईश की करै न कबहूं पाप॥
सब हि चराचर जगत को देखत है वह आप॥
सुनि कै दुर्जन के वचन हो रहिये चुप चाप॥
करै जो समता तासु की नीच कहावे आप॥

प्रश्नोत्तर द्वितीय प्रकार

दोहा

सुखी जगत में कौन है कहो मोहिं समुझाय
होय लीन भगवान में सुखी वही जग माहं
दुखी कहत है कौन सों इस महि के बीच॥
देख परोदय जो जरै दुखी रहत वह नीच
को जग में धनवान है जाको मन न डोलाय
जो राखै संतोष मन वह धनिकन में राय॥
कहत दरिद्री कौन सो कहो मोहिं करि नेह
धन तृष्णा जाके अधिक जानु दरिद्री नेह॥
पुण्य वान जन होहिं जे तिन की कहु पहिचान
ईश्वर उर जाके हृदय पुण्य वान सो जान॥
पापी जन जो जगत में सो किमि जानो जाय
जो अपने प्रभु सों विमुख पापी वही कहाय
बुद्धि मान नर के अबै लक्षण कहो बखान
जो जन निन्दा सों डरै बुद्धिमान सो जान॥
सज्जन जन जग कौन से कहु निश्चय कर मोहि
राखि दया सब भल चहै सज्जन जानो सोहि
सब हि जगत जन एक से कैसे दुष्ट लखाय
पर अकाज में जासु चित सो नर दुष्ट कहाय
बड़ो कवन या जगत में पूंछों मैं यह बात॥
ढके दोष जो सबन के सो जन बड़ो कहात

दुष्ट भार्या मीत शठ उतर दहलुआ देइ ॥
सांप साथ घर वास करि मीचु हाथ गनि लेइ

राज नीति दोहा ॥

करे न रिपुता काहु सों सब के रहु तुम मीत ॥
जाते मन प्रफुलित रहै होइ न रिपु की भीत
रहै जौन से देश में तहां के नृप की नीति ॥
देखि चलौ ता चाल को यह चतुरन की रीति
श्रम सुचाल के कारणे नर लहु प्रभु चित वास
ताते धन कीरति लहै पूरे पद की आस ॥ ॥
जो नृप विद्या बल बिना कियो चहै परबंध
सो पूरी आपति लहै जिमि कुघाट चल अंध
पहिले लखिये दोष गुण फेरि अरंभै काज
जाते मन को होन दुख लहै न जग में लाज
ऐसे नर सों बच रहो करै न कबहूं घात ॥
बार बार सौगन्ध खा कहै दीन है बात ॥
सुनि के सब की बात को प्रथमहिं ढूंढो हेत
फिरि उत्तर मुख ते कहो यहि विधि राखो चेत
पर निन्दा करि जो तुम्हैं देत बड़ाई पूर ॥
मति भूलो यापै कहूं तुम्हैं कहै गो कूर ॥
जो आपुस में बैर करि मिलै और के साथ ॥
वे भोगत हैं बहुत दुख परि बैरी के हाथ ॥

पालौ परजा पाय पर जाते जग यश होय ॥
पावो सुख पर लोक में यह कहि चतुर लसोय

कुंडली

शरण पुत्र दोऊ बड़े युग चारहु परमान। सो नरेश दशरथ तजे वचन न दीन्हो जान। वचन न दीन्हें जान बहे न कीय ही बड़ाई। बानि कहीं सो होय और सर्वस किन जाई। कहि गिरिधर कविराज भये दशरथ प्रण बाना। वचन कहे नहिं तजे तजे सुत अरु निज प्राणा ॥

नारी अति बल के भये कुल कर होय विनाश। कौरव पांडव वंश को कियो द्रोपदी नाश। कियो द्रोपदी नाश कैकेई दश- रथ मारे। रामचन्द्र से पुत्र त्यऊ बनवास सिधारे। कहि गिरिधर कविराय सदा नर रहैं दुखारी। सो घर सत्या ना- श जहां है अति बल नारी ॥

यारो शायर दश भले कायर भल न पचास। शायर र- ण सन्मुख लरै कायर प्राण की आस। कायर प्राण की आ- स भागि रणते वे आवें। आपु हंसावहिं लोग नृपति को नाम धरावें। कहि गिरिधर कविराय बात चारहु युग जा- हिर। शायर भले हैं पांच संग सो भले न कायर ॥

तोरहु नदी न नीर तरु जो वरषा वरसाय। वारि बाढ़ि दिन चारि की अपयश जन्म न जाय। अपयश जन्म न जाय जाय पाहन मिटि रेखा। विभव बड़ाई समय सदा

कहुँ रहन न देखा। कहि गिरिधर कवि राय एक नेकी जनि
छोड़हु। समय घटत पुनि बढ़त तीर तरु नदी न तो रहु॥
बड़े पात को देखि कै चढ़ो कमंडल धाय। तरु वरहो हित
भरु सहहि रंड फटो अरण्य। रंड फटो अरण्य फूल अंत-
हि कहुं फूला। पतियां गई सुखाय और मारग में भूला। क-
हि गिरिधर कवि राय सुनहु अन ओछी अड्डे। वे रे रहिजनि
जाहु जहां बातन के बड्डे॥
जाकी धन धरती लई ताहि न लीजे संग। जो संगै राखै बनै तो क-
रि डारु अपंग। तो करि डारु अपंग फेरि फरकै सोन कीजे। कपट
फंद बत लाय तासु को मन हर लीजे। कहि गिरिधर कवि राय ख-
टक जैहै नहिं ताकी। सो कछु करै उपाय हरी धन धरती जाकी॥
हीरा अपनी खानि को मन हीं मन पछिताय। गुण क़ीमति जा-
नी नहीं तहां बिकानो आय। तहां बिकानो आय छेदि करि क-
मर सों बांध्यो। बिन हरदी बिन लोन मांस ज्यों फूहर रांध्यो। क-
हि गिरिधर कवि राय धरैं कैसे मन धीरा। गुण क़ीमति घटि
गई यही कहि रोवै हीरा॥
हंसा यहं रहिये नहीं सर दरगये सुखाय। जो रहिये तो शीशपर
बगुला दैहैं पाय। बगुला दैहैं पाय कौन कारे ह्वै जैहो। लोक हं-
साई होय कहा कछु इज्जति पैहो। कहि गिरिधर कवि राय मोहिं
एक रही अंसा। याहू ते कछु घाटि और हू होई हंसा॥
नयना जब पर बश परे उनमें गुण सब जांय। वे फिरि

फिरि जोरी करैं ये फिरि फिरि लपटांय। ये फिरि फिरि लपटां य नेत्र वहुरे भरि आवैं। खान पान सुख त्याग रात दिन हीं दुख पावें। कहि गिरिधर कवि राय सुनहु तुम श्रवण निनयना। लोक जोरें अकलंक परैं जब पर बस नयना॥

धोखे दाड़िम के सुवा गयो नारियर खाय। खन खाई पाई सजा तब लाग्यो पछिताय। तब लाग्यो पछिताय बुद्धि अपनी को रोवै। निर्गुण यन के साथ बैठि अपनो गुण खोवै। कहि गिरिधर कविराय घरें जेहे बिन रोखे। चोंच खट कै टूटि सुवा दाड़िम के धोखे॥

साईं पुर घाला परो आस मान ते आय। पंगु अंध दोउ छोड़ि कै पुर जन चले पराय। पुर जन चले पराय अंध एक मतो विचारो। धरि पंगा को पीठि डीदि वाकी पगु धारो। कहि गिरि धर कवि राय मते सो चलियो भाई। बिना मते को राज्य गई रावण की सांईं॥

साईं समो न चूकिये खेलि शत्रु सों मार। दांव परे नहिं छोड़िये तुरत डारिये मार। तुरत डारिये मार नरद काची करि दीजै। काची होइ तो होइ जीति जग में यश लीजे। कहि गिरिधर कवि राय बड़े बुधि मानन गाई। कोटिन करिय उपाय शत्रु को मारिय सांईं॥

साईं घोड़न के अछत गदहन आयो राज। कौवा लेंदे हाथ में छांड़ि देत हैं बाज। छांड़ि देत हैं बाज राज अब

ऐसो आयो। सिंहन को करि कैद स्यार को गज हि चलायो। कहि गिरिधर कवि राय जहां ये बूझ बड़ाई। तहां न बसिये रयन सांझ ही चलिये साईं॥

साईं नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि। जाति नाश भा मिलत ही मान महत की हानि। मान महत की हानि कहो अब कैसे कीजे। जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजे। कहि गिरिधर कवि राय कच्छ मच्छन सकुचाई। बड़ो फ-जीहत चार भयो नदियन को साईं॥

लक्ष्मण मेघ नाद का युद्ध

भुजंग प्रयात

लखा मेघ नादे निजे सेन हारी। गयो संदना रूढ़ व्योमै प्रचारी। घने अस्त्र शस्त्रौघ छांड़े कराला। किये मर्कटी भालु सेना बिहाला। तदै लक्ष्मणे राम ब्रह्मास्त्र मारा। करो भस्म शत्रून पूरे सोधि भारा। पुनर्वानरी सेन देखा दुखारी। ह्रदय राम चन्द्रोपि के सोच भारी॥

दोहा क्षीर समुद्र समीप अब मारुत सुत तुम जाउ॥
द्रोण चल औषधि सहित कपि दल लाय जिआउ
प्रभु आयसु कै लाय गिरि जिये भालु कपि वीर
पुनि पहुंचायो शैल वर क्षीर समुद्रहि तीर॥

प्रज्ज्वलिया छंद

पुनि सिंह नाद करि भट अपार। फेंकैं गढ़ पर नाना पहार

सुनि रावण विस्मय लहि अपार। बोले समस्त योधा जुझार॥
जो रहे भवन धानु न दे राय। तेहि तुरत डारिहों मैं मराय॥ भय
त्रस्त जुरे सब समर जाय। डोले निशान तूरन बजाय। मारैं त्रि
शूल असि शक्ति बान। परिघ अस्त्र नाना विधान। गिरि तरु
नख दंतन मुष्टि लात। कपि करैं असुर कुल कर निपात। पग ग
हि महि पटकैं भुज उखारि। शिर तोरि फोरि कोटिन संहारि।
लै कनक खंभ कोटिन कपीश। करि सकल निशाचर चमू खीश।

दोहा राम लक्ष्मण कीश पति अंगद पुनि हनुमान॥
हले निशाचर सेन बहु को करि सकै बखान॥
माघ द्वितीया आदि दै आठ दिवस रण बीच
राम कृपा कपि दल कुशल मरे निशाचर नीच

भुजंगप्रयात

पुन वज्र दंता सुरारिं प्रबोधी। अबै मर्कटी सैन मारो विरोधी॥
चतुर्था चमू संग योधा जुझारा। रचो कीश नै देवतै कै प्रहारा॥
इहां कीश सेनाधिपो लै पहारा। चमू राक्षसी युद्ध कैकै पछारा
तहां वज्र दंता लखा सेन हारी। हनै वानरा बाण वृष्टि प्रहारी।
तबै अङ्गदौ वृक्ष पाषाण मारा। लियो छीन खड्गौ शिरो काटि डारा
गिरा वज्र दंता जबै प्राण त्यागी। रही जो चमू लंक को घूमि भागी

पज्झटिका

सुनि वज्र दंत हति लंक नाथ। दलि दशन अधर रिसि मींजि हाथ
पठयो अकंपन भट जुझार। संग क्रूर दीन्ह सेना अपार॥

ते कपिन आय करि द्वंद युद्ध ।। शर शक्ति शूल असि हते क्रुद्ध
कपि यूथप लैलै तरु प्रहार ।। रजनीचर दल हति करैं संहार
गज रथ हय वाहन सकल नाशि । रजनीचर भटन पछारि ग्रासि ।
लखि धाय अकंपन भटशु भार शर शूल न हनि सेन प विडार
पुनि हनो मानते खरे लाग ।। शर शक्ति शूल विवि धोघ त्याग
तेहि झपटि पटकि हृदि हनो मार । वध लखि अकंपन निशिचर पराव

भुजंगप्रयात

प्रहस्तै लखा राक्षसेनं शुभारा । सबै राक्षसी सेन जीते निकारा
पठायो महत् गौर वातूलंकराजा । चतुर्धा-चमू लै रणो आयगाजा
इहां मर्कटी युद्ध कीन्ही अपारा । शिला वृक्ष लै राक्षसी सेन मारा
उहां राक्षसी शूल शक्त्यासि पासै । गदा पाश्य नाराच ले वीर त्रासै
लखा नील हू वीर सेना दुखारी । शिला पानि लै सो प्रहस्तै प्रहारी
प्रहस्तो महावीर वारोघ मारा । बहे रक्त पानो गिरी भेरु धारा ।।
तबै नीलहू वृक्ष लै शीश मारा । गिरा सेन पै भूमि मानो पहारा
लखा प्राण त्यागा प्रहस्तै विशेखा । भयातु राक्षसा भागलंकै अभागा
सुना लंकराजा गई सेन मारी ।। प्रहस्तादि से सेन योगे हंकारी
हृदय दुःख कै मेघ नादै बोलायो पुरै सोपि आपै रणो गर्जि आयो ।
लसै संग चौरंग सेना घनेरी ।। जुझाऊ बजैं ढोल तूरादि भेरी ।
इहां भालु वीरौ शिला पाणि लैकै थकै सो महाघोर संग्राम कैकै
सुकंठादि राजा सबै भूमि पारा ।। रथी रावणी सर्व सेना विडारा ।
पुन बंधु को देखि कै तीक्ष्ण धारा । यमं दंत शक्ती हृदय ताकि मारा ।

दोहा लक्ष्मण तेहि पाछे कियो आपु सही सो सांगि
गिरे मूर्छि महि तुरत ही महातीव्र उरलागि

प्रज्झटिका

तब तुरत दशानन दौरि आय । बहु बल करि रह लखनै उठाय ।
किमि उठैं भुवन सब धरे भार । श्रीरामानुज शेषावतार ॥ ल-
खि तुरत धाय तब हनूमान । तेहि मारि लात वज्र समान । महि
गिरा मूर्छि तन सुधि भुलाय । कपि गह्यो तबै लक्ष्मण उठाय ॥

हरिगीतिका

लखि बंधु गति राजीव नयनन नीर रह भर सादके ॥
सजि तून कटि शर चाप कर शिर जटा मुकुट बनाय के
श्री राम है आसीन हनुमत गये रन मह धाय के ॥
गंभीर वचन सुनाय लंके श्वर हि क्रोध बढ़ाइ कै ॥
सुनते दशास्य प्रहारि मारुत तीव्र शर घायल कियो
लखि सवरण हनुमत कोपि रघुवर काल रुद्र हुवा दियो ।
शर वर्षि धर्षि दशाननै सह सैन्य भूमि गिराय ऊ ॥ ।
तेहि वेगि स्पंदन घालि सारथि लंक लज्जित लायऊ

तोमर

इतराम चंद्र खरारि । रन राक्षसा गन मारि ॥ ॥
पुनि आय भ्रातहि देख । अति कीन्ह शोच विशेष
कह पवन नंदन जाउ । दिवि औषधै सोद लाउ ॥
सुनि राम बैन तुरंत । गिरि लेन गे हनुमंत ॥ ॥

उत चारु मुख सुधि पाय। दश मौलि हू अकुलाय
गऊ काल नेमि के जाय। तेहि दीन्ह ऐसि रजाय॥
कपि आयधै गयो लेन। तेहि रोकु छल बल केन
तेहि भांति बहु समुझाय। नहिं राम मानुष आय॥
हरि लीन्ह नर औतार। सोइ भंजि हैं महि भार
तेहि बैर पूरण आइ। तेहि भजे सुख सरसाइ
सिय दे करौ अति हेत। छमि हैं सो कृपा निकेत
दश मौलि नाहिं रिसान। शर बेगि कहु किन जान

तोमर

तब काल नेमि मन कियो तर्क। यहि हाथ मरे मोहिं होय नर्क।
मोहिं मारै जो मारुत कुमार। है हौं विशेषि संसार पार॥
अस समुझि मार्ग माया उपाय। सर विमल सलिल रचि कुटी छाय
सह शिष्य बैठ मुनि कपट जाय। चख मूंदि जपै माला दिखाय।
तेहि पौन नंद सुनि कुटी ताक। सर विमल सलिल फल फरे पाक
कर दंड जाग मुनि कपट रूप। शिव पूजा जहं तहं करै अनूप।
मुनि बंदि कहा तहं पौन पूत। भगवन हनुमत मैं राम दूत॥
औषधि निमित्त गिरि लेन जाउ। अयौं तृषित जला श्राय मोहिं बताउ
जल आय दीन्ह कै भूरि भाउ। छल रहौ आजु फल मधुर खाउ
जिय लखन भालु कपि कटक साथ। लखि कृपा दृष्टि रघुवंश नाथ
मैं जानत सब तपसा प्रभाव। उठि मात तात प्रभु पास जाउ
मुनि स्वल्प सलिल नहिं तृषा जाइ। वापी सर मोहिं दीजे बताय।

चौपाई

असुर जाय सर दीन्ह बताई ॥ चक्षु मीलि जल पीवहु जाई ॥
पुनि उपदेश देउं तोहिं भाई ॥ जीवन औषधि जिमि दर साई ॥
गयो मूंदि चख पीवत पानी । मकरी गहा चरण रिस आनी ॥
ताहि तुरत कपि बदन बिदारा । मरते दिव्य रूप तेई धारा ॥
तेई सब कथा कपीशहि गावा । हतो असुर मग रोकन आवा ॥
छलिहि विलोकि पवन सुत जाई । कहते मंत्र लेव किन आई ॥
गुरु दक्षिणा प्रथम तुम लीजे । बहुरि मंत्र उपदेशहि कीजे ॥
अस कहि मुष्टिक कठिन प्रहारा । युद्ध कियो तेहि निज तनु धारा ॥
अस्त्र शस्त्र छल बल बहु माया । करत निशाचर युद्ध निकाया ॥
छन महं सबै संहार कपीशा । बचे ते गये जहां दश शीशा ॥

दोहा बहुरि कपीश क्षणाई महं द्रोण चल ले दीन्ह
ल्याया यो लक्ष्मण सैन सब युक्ति सुखेन सो कीन्ह
हरषि भेटि प्रभु पवन सुत बहु विधि गौरव दीन्ह
अनुजहि भुज भरि भेंटि पुनि निज उर शीतल कीन्ह

अथ पत्रिका मित्र को जो पद्य में है

(विश्वामित्र, रेणुका, परशुराम, शिव, पार्वती)
दोहा । गाधि तनय भगिनी सुअन तासु गुरु पत्नी जानि
(गणेश)
ता सुत बंदौ पद कमल जोरि जानु अरु पानि ॥
(लक्ष्मी, विष्णु, कमल, ब्रह्मा, सरस्वती)
सिंधु सुता पति तासु सुत तासु तासु सुता मनाय ॥
शंभु गौरि गुरु पद सुमिरि पत्री लिखत बनाय ।

स्वस्ति श्री सुखमा सदन विद्या गुण परवीन ॥
विद्वज्जन मणि कृपा निधि परम आतमा दीन ॥

चौपाई

राखि धरणि ऊपर निज भाला। करत प्रणाम हजारी लाला ॥
कृपा दृष्टि रखियो मो ऊपर ॥ तुम पर रखै सदा धरणी धर
इहां कुशल तव कृपा अपारा। वहां रखैं श्री शंभु उदारा ॥
होत जाहि सुनि परमा नंदा। यथा चकोर निहारत चंद्रा ॥
आगे समाचार अब गावत ॥ सत्यहि द्विज वर तुमहिं सुनावत
विरह अनल लागी चहुं धाई। तृण वन भस्म करत समुदाई
ज्वाला शोक उठत बहुताई। लपट दुःख आकाश हि जाई
मन मृगा ता भीतर भयखाई। भाजि भागि चहुं ओर न जाई
करत विचारन बनत बनावा। लख्यो उबार न काहू ठांवा ॥
श्री हरि हरण तक्यो अकुलाई। कहि जय जयति जयति सुरसांई
जय देवकि सुत जय नंद नंदन। जय जय केशी कंस निकंदन।
जय जय मोहन जय बन वारी। जय राधा वर कुंज बिहारी ॥

दोहा जैसे गज को ग्राह सन बोरत लीन्ह बचाय ॥
द्रुपद सुता की लाज जिमि रख्यो सभा विच धाय
तैसे ही प्रभु या समैं मेरो करो उबार ॥ ॥
भस्म होय नहिं क्षणक महं चहुंदिशि लागि दवार
यहि विधि व्याकुल चित्त जब कीन्ही बहुत पुकार
दीन वचन सुनतै प्रभू तुरतै लगे गुहार ॥ ॥

प्रलय घटा सम पत्र है तासत पहुंचे आय ॥
सुख नीर वर्षाय तिन्ह दीन्हो सकल बुझाय
महा वृष्टि तत क्षरा भई उमग्यो सागर सुख
ठाढ़ बहाये मूल सह विरह करारे दुःख ॥
करौं बड़ाई कौन विधि तव पत्रन में तात ॥
भारति जिय संशय अधिक गरा पति शेष सकात

छन्द

कहिये केहि भांति बखान करौं। नहिं जात तरो सुख सागर को
मति मोरि पपील समान अहे। गुरा सागर रूप उजागर को
गुरा गाय लहे जग पार जु ताहि भयो कवि ऐसे हु नागर को॥
कह लाल हजारि विचारि हिये उलचे दधि जो मुख गागरि को

छन्द

कछु यद्यपि गावत भावि सुनावत हर्ष बढ़ावत है मतिके अनुसारहि
दुखको जहं सागर बुद्धि उजागर आगर सो तव पत्र अगस्त विचारहि
मन मोर हतो जहं मीन समान बिना जल व्याकुल दिन्न रवं भार अपारहि
तहं पत्र तुम्हार सुधा पति आय समान दियो अति आनंद लाल हजारहि

छन्द

चातक सम जान्यौ चातक मान्यो मेरो मन यह सुख दाई ॥
पत्री तव स्वामी अहो संघाती मुद मंगल जल वर्षाई ॥
मन मोरे भाई हे द्विज राई घटा रूप तव रवत आयो ॥ ॥
कह लाल हजारी हृदय विचारी महा नंद मन उपजायो ॥

दोहा चतुराई जो तुम लिखी सबै जानि हम लीन ॥
होत ठहेर ठहर नहिं कहुं बदलाइ प्रवीन ॥
अधिक अहौ सब बात में आप द्विजन शिरमोर
जिन बातन में हो अधिक सोउ सुनहुं करि गोर

कुंडलिया

शाला अहै नवीन मम डांक भवन पुनि दूर। शिशु बहु ताते अमित श्रम होत पत्र मति रूर। होत पत्र मति रूर आपु लेखो यह भाई। मेरो अब पुनि हाल सकल सुनिये चितु लाई। कहत हजारी लाल अहो दीनन प्रति पाला। अब हीं अहै कृपाल नई मेरिहु तो शाला ॥

दोहा लड़कों केर ज भाव अब सुनिये मीत सुजान ॥
दिक चौगुन अरु एक पुनि दर्जे रजस्टर जान ॥
छोटे बालक अधिक पुनि अहैं पांच छः सात
अबहिं जानु वर्षा बिगत ऐहैं औरहु तात ॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद ते अहै हाल यह मीत ॥
मिलन नहीं रव्य स्त लग मुहिं अवकाश पुनीत
यामिनि दल लौं होति पुनि वर्णन हरि हर गाथ
सुनन आवहीं ग्राम जन नित्य नियम यह गाथ

कुंडलिया

काहू दिन काहू समय नहिं अवकाशित भाव। ताती लहु दिन को बहुत लरिकन होत जमाव। लरिकन होत जमाव डांक

मंदिर पुनि दूरी। यह कोस तिहि गांव आपु डेरो है मलि रुरी।
कहत हजारी लाल सब हि विधि तुम बड़ आहू। पर नहिं बु-
द्धि रसाल बड़े इन बातन काहू॥ २॥
बाहाना तुम कीन्ह सो हम सब लीन्हो जान। अब चतुराई
नहिं बहुत कीजे चतुर सुजान। कीजे चतुर सुजान नहीं ऐसी
चतुराई। बनै वरए बर माहिं बात कहु नाहिं बनाई। कहत ह-
जारी लाल अहो गुण बुद्धि निधाना। पै हम लीन्ह तुम्हार
बूझि सब ही बाहाना॥
दोहा। तुम को मोते कछु अधिक घाटि नहीं अद काम
निशि सगरी नातील दिन साद काम पर काम
ताहू पर तुम नहिं लिखत मीत कबहुं खत पत्र॥
करत चतुरई पुनि अहो यह नहिं बात इकत्र॥
अहैं लिखत मैं पत्र किमि यद्यपि नहीं छुटकार
उचित यहै तुम को लिखत कीजे हृदय विचार
यह शिक्ष मेरी मानियो सुनि लीजे दे कान॥॥
हरगिज़ हरगिज़ नहिं कियो चित्त अनत कहुं जान
कारण सकल निषेध कर सुनहुं मीत यह आहि
जान नहीं बाकी कछू ख्याल पुराननि मांहि॥
यद्यपि जानत भली विधि मोको यहै यकीन
कै सिहु बिगरी होइ पुनि लेहु सुधारि प्रवीन।
पर मैं ताहू पर तुम्हें मनै करत सत्तान॥

पारस निरगुण रंक घर जिमि तिहि भांति बखान
शिक्षा लिखो जो आपने मम गुरु पत्री हाल ॥
कारण कौन लिख्यो नहीं सुनिये सकल कृपाल
तब पत्री अति शीघ्र में लिखी लखन पुर माहिं ॥
ताही ते संक्षेप अति वर्णौं ब्योरा नाहिं ॥ ॥
गद्य पद्य पत्री सकल दोहा छंद कवित्त ॥ ॥
सोरठ चौपाई कुंडलि अर्थ न गूढ़ रचित्त ॥
जासु शिष्य तुम अस कहैं तिन के खत कौमीत
करौं बड़ाई कौन विधि करौ सत्य परतीत ॥ ॥
भयो आजु लौ सो भयो अब आगे सुनि लेहु ॥
विनय मानि निज जानि जन लिख्यो पत्र करिनेहु
नख अरु मास मिलाय कर तातर ग्रह दिग युक्त १८३२
संवत आश्विन पाख सित गज तिथि सुर गुरु भुक्त ४०

अथ फुटकर काव्य कवित्त ॥

अंध महा दश कंध हरी सिय राघव को शरता उर लाख्यो। शक्रहि श्राप दयो मुनि गौतम जानि कुकर्म के कर्मनि चाल्यो। शुंभ निशुंभ हने तरुनी अरु तारहि लागि वध्यो वर बाल्यो। जो समझै मन में शठ तू किन कोन गयो पर वाम को घाल्यो ॥

कोऊ एक पंडित महा मदन की उमंग सों जाय पहुंचे वेश्या के भवन में। रूप रस वाय दीन्हों वस्तु सब आनि दीन्हों

ऐसी सुख चैन कीन्हों जैसे रमनी पुर गवान में । भोर होत

चलत बाट वेस्या हंसि पूंछे वाल हमैं तुम्हैं कवै भेद ह्वै है

ऐसी सुख चैन में । जो पै वेद पुराण आगम सब सत्य है

है तो हमैं तुम्हैं भेद ह्वै है कुंभी पाक भवन में ॥

चौबोला छंद

सुर पति हित श्रीपति वामन ह्वै बलि भूपति सो छलहि च

ह्यो॥ स्वामि काज हित शुक्र दानहूं रोक्यो दग वरु हानि सह्यो॥

सुमति होत उपकार लाख हित तो भूठो कहत न संक गह्यो॥

पर अपकार होत जानि हित तो कबहु न सांचो बोल कह्यो॥

हिम ऋतु वर्णन वरवा छंद॥

हिमि ऋतु क्षिति मिति फैली जान स भाग

भानु कोन में पैठो तापत आग ॥ ॥

हिम डर भे घे परदे परदे कोस ॥ ॥ ॥

युग परदे बिच बैठे परदे पोस ॥ ॥

सीत भीत भव आवत भरि तन जोस॥

वीर धीर धुर ह्वै गे परदे पोस ॥ ॥

निशि पति हित तक सक बड़ तज तन गात

सिसिर सीत डर दिन पुनि सकुचत जात॥

सीत नृपति भय मानहुं नीति विचार ॥

दीन राग जल डारे कारा गार ॥ ६ ॥

सोरठा होली बहार में

झोरिन मध्य अबीर लै अहीर एकत्र है ॥
गये जहां बल बीर कहत तीर होरी हाय ॥
जेहि पद नख ते गंग निकसी शिव शिर पै धरी
सो ब्रज बाल के संग चल्यो बाल ब्रज की नकत

कवित्त

चलो ब्रज चंद चंद बदन हुचंद करे चंद रखे भूषन अनंग अं-
ग फबरे। कवि सरदार हेम वारी पिच कारी हाथ साथ कोर दोर्द
पै लिमाक दार दबरे। छूटे छुर कायल छबीले छैल छानी दा-
व अग्र भये जोम दार जेरी लिये जबरे। झोरिन में बोरिन
में प्रबल पिछौरिन में बांधि के अबीर भे अहीर संग
सबरे ॥

सोरठा

आवत सुने अहीर धारे चीर सुरंग वर ॥
चली राधिका तीर उमा क्षीर जासी सकल
आजु नंद को नंद पकरो री छल छंद करि
सुचि सुखमा को कंद चंद्र चारु ब्रजको बिमल

कवित्त

कवि सरदार खोट कंज के करैया कोटि कोटि चंद वारों जाके
आनन अमंद पै। एकै संग संग भीर भंवर भगावै गावै एकै
का अहीर धावै छवि छकि छंद पै। एक ओर ललिता

विशाखा एक ओर घोर रंग लै अबीर की सो ताकत बुलंद पै।
। होरी खेलिबे को चली कीरति कुमारी मानो माल्ल मेलिबेको
चली सीता जू सुराम पै। धन कैसी धुमक धमक धूम ढोलन
की तैसे ही सुजान गान पूनो पिन्न पिकसो। झारसी लगा-
ई धार वार पिचकारी चारु चमक चलाक चंचला ज्यों चा-
उ चिकसो। केसरि ते कलित सुसाधा राधा आधा सुख
देखि सरदार श्याम उर वर विकसो। शोभा सुचि सरससु-
भाय सर साय ससी मानो गुरु गेह ते सनेह मानि निकसो। स्व-
द की उमंग औ अनंग की तरंग चढी अंग सी सुअंग कुच
शृंग में समान रोल। फरकि फरकि कान आन को दबावें न-
यन सरकि सरकि लई भूषन गमार गैल। ब्रजसरदार
कीस जोर मुख कान सबै ओरते निहार हार फूटिगे फराक
फैल। जौ लौ सुकुमारी सारी सरकि भिहारे तौ लौ छीनि
पिचकारी गयो छूटि कै छबीलो छैल॥

सवैया

दारिद विदारिबे को प्रभु के तलास तो हमार ह्यां अनगन
दारिद की खानि है। अघ की सिकारी जो है नजरि तिहा-
री तौ हां तन बन पूरन अघना राख्यो ठानि है। दास निजु
संपति सु साहेब के काज आये होत हरषित पूरे भाग उन
मानि है। आपनी विपति को हजूर हो करत लखि रावरे
को विपति विदारन की बानि है॥ २॥

पात फूल दातनि को देवे को अरथ धर्म काम मोक्ष चारों फल मोल ठहरावती। देख्यौ दास देव दुर्लभ गति दैकै महा पापि-न के पापन को सृष्टि ऐसी पावती। त्यावत तर्क हू ते नन जात रूप कोउ ताको जात रूप सैल ह्नी को साहिबी सजावती। संगति मे बानी करे कितेक तुम दीस्यो देवि गंगा पै न सेवा की तरह मोहि आवती॥ २

आभरन साजि बैठो ऐंठो जनि भौंहें लखि लालन कहे गो प्यारी कला जैसे चंद की। सुंदरि सिंगारन बनाइबे को बात मै तिलोक मा सी ठहरै हो सी है मुख कंद की॥ दास दर आनन उदास तामे देखि के कहे भी कमल सो है बानी नंद नंद की। योही परस जाति उपमा की पंगति हो संगति अजहु तजो मान मति मंद की॥

चंद चतुरानन चखन के चकोरन के चंचरीक चंडीपति चित्त चोप कारिये। चहूं चक्र चारो युग चरचा विरानी चले दास चा-रो फलद चपल भुज चारिये। चोप दीजे चारु चरनन चित्त चाहिबे की चेरन को चेरी चीन्ह चूक न निवारिये। चक्र धर च-कवे चिरैया के चंढैया चिंता चूहरी को चित्त ते चपल चूरि डारिये॥ ४॥

सारद नारद पारद अंग सी क्षीर तरंग सी गंग की धारसी। शंकर शैल सी चंद्रिका फैल सी सार सरेल सी हंस कुमारि सी। मनि राम प्रकासहि माद्धि विलास सी कुंद की कास-

सी मुक्ति भंडार सी । कीरति श्री हनुमान प्रसाद की राजति उज्ज्वल चमेली को हारसी ॥ ४ ॥

चौपाई

निज कृत जो मैं भाषा भाषी। सो मैं सब के आगे राखी ॥
बिगरी सबै सुधारैं सुख से । कटुक वचन न कहैं कछु मुख से
एतनी विनय हमारी मानैं ॥ आपना ते लघु हम को जानैं
मनी राम है नाम हमारा । ॥ संग्रह कीन्हों लघु विस्तारा

दोहा । षट दल षट दल नंद भू ऊर्जमास शनि वार
धनद त्रयो दशि आई निशि ग्रंथ हि कियो तयार

सोरठा घर है नगर मोहान जाति मोरि भू देव है ॥
सुनिये चतुर सुजान आपना ते लघु मम गनब ३३

शम्भुराम्

सूचना

इस लघु ग्रंथ में जिन जिन कवियों की कविता है उन के नाम ग्राम पठन पाठन की व्यवस्था । श्री मान् परिडत महेश दत्त जीने अपने ग्रंथ काव्य संग्रह में सब लिखा है तिस्से अध्याप कों को चाहिये कि कृपा पूर्वक अपने अपने विद्यार्थियों को बतादेवें और जो जो कठिन शब्द परे हैं उन को भी काव्य संग्रह में देख लेवें ॥

इतिशुभम्